रक्त में विकसित एन्टीबॉडी (प्रतिरोधी तत्व) की जाँच कर शरीर में वायरस की उपस्थिति को जाना जाता है। कई परिस्थितियों में एच.आई.वी. वायरस के विरुद्ध एन्टीबॉडी बनने में 6 से 12 सप्ताह का समय लग सकता है। इस अवस्था को (विन्डो पीरियड) कहते हैं। उच्च जोखिम व्यवहार के बावजूद भी यदि कोई व्यक्ति जाँच में एच.आई.वी. मुक्त पाया जाता है तो उसे 6 से 12 सप्ताह के पश्चात् दोबारा एच.आई.वी संक्रमण की जाँच करवानी चाहिए ऐसे व्यक्तियों को सुरक्षित व्यवहार अपनाना चाहिए।

पॉज़िटिव रिपोर्ट क्या है?

- यदि व्यक्ति के रक्त नमूने की पहली जाँच में एच.आई.वी. के शरीर में होने का संकेत मिलता है तो परिणाम (रिज़ल्ट) देने से पहले उसी रक्त नमूने से दो अन्य जाँच किट्स से भी जाँचें की जाती हैं। पॉज़िटिव रिपोर्ट का अर्थ होता है कि व्यक्ति के रक्त में एच.आई.वी. वायरस के विरुद्ध प्रतिरोधी तत्व (एंटीबॉडी) पाये गये हैं।
- एच.आई.वी. पॉज़िटिव या एच.आई.वी संक्रमित होने का अर्थ यह नहीं होता कि उसे एड्स है। एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति वर्षों तक बिना किसी रोग या बीमारी के लक्षण के स्वस्थ जीवन जीता है। यह जान लेने के बाद कि एच.आई.वी. वायरस व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर चुका है, वह अपने स्वास्थ्य की रक्षा हेतु आवश्यक कदम उठा सकता है। वह उचित देखभाल, खानपान, व्यायाम, चिकित्सीय परामर्श एवं मित्रों के सहयोग से लम्बे समय तक स्वस्थ जीवन जी सकता है। इसलिए एच.आई.वी. की स्थिति को जानने के लिए शीघ्र जाँच करवाना व्यक्ति के हित में है।
- एक बार शरीर में HIV संक्रमण की पुष्टि हो जावे तो तुरंत नजदीक के ART केन्द्र में पंजीयन कराकर व अन्य जाँचें चिकित्सक के परामर्श अनुसार करानी चाहिए।

यदि रिपोर्ट पॉज़िटिव आए तो क्या करें?

- निराश न हों, एच.आई.वी. के साथ भी लंबे समय तक स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है।
- अपने परामर्शदाता से नज़दीक के ए.आर.टी. केन्द्र का पता पूछें व शीघ्र वहां अपना पंजीयन कराएं।
- अपने जीवन साथी/यौन साथी की भी एच.आई.वी. जाँच कराएं।
- गर्भवती माता की भी एच.आई.वी. जाँच नज़दीक के ICTC केन्द्र में कराएं।
- डॉक्टर की सलाह अनुसार अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें।
- सबसे महत्वपूर्ण - बिना कंडोम के यौन संबंध हरगिज स्थापित न करें।

दूसरों की रक्षा करें –

कंडोम का उपयोग कर सुरक्षित यौन संबंधों के आधार पर ही स्वयं की व दूसरों की रक्षा कीजिए।

- एक दूसरे के साथ मिलकर सुई और सिरिंज के माध्यम से नशीली दवाओं का सेवन न करें।
- यदि एच.आई.वी. संक्रमित हों तो भूले से भी रक्त दान, वीर्य दान तथा अन्य शारीरिक अंगों का दान न करें।

अधिक जानकारी के लिए अपने ज़िले में स्थित एकीकृत परामर्श एवं जाँच केन्द्रों पर संपर्क करें।

MPSACS

मध्यप्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण समिति

द्वितीय तल, तिलहन संघ भवन

1 अरेरा हिल्स, भोपाल म.प्र.

Email : mpsacs@gmail.com

www.mpsacsb.org

MPSACS

ज़िंदगी की ओर क़दम बढ़ाएं

आई.सी.टी.सी.

एकीकृत परामर्श एवं जांच केन्द्र

जानकारी

सलाह

मुफ्त जाँच

याद रखें

स्वयं की सुरक्षा में ही
परिवार एवं समाज की सुरक्षा है।

एच.आई.वी./एड्स क्या है ?

एड्स (एक्वायर्ड इम्यूनो डेफीशिएन्सी सिंड्रोम) एक वायरस से फैलता है जिसे एच.आई.वी. **(ह्यूमन इम्यूनो डेफीशिएन्सी वयरस)** कहते हैं। यह वायरस शरीर में रोगों का सामना करने की स्वभाविक क्षमता को कम करता चला जाता है। (शरीर में बीमारियों से जूझने की शक्ति नष्ट होने के कारण अनेक बीमारियाँ शरीर को घेर लेती हैं। इस अवस्था को एड्स कहा जाता है।)

एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति कई वर्षों तक सामान्य जीवन जी सकता है। लेकिन जब शरीर में बीमारियों से लड़ने की ताक़त खत्म होने लगती है तब कुछ वर्षों में ही वह किसी न किसी घातक रोग का शिकार हो जाता है। जिन्हें अवसादवादी संक्रमण भी कहा जाता है। HIV संक्रमित व्यक्ति ART केन्द्र में अपना पंजीयन करवा कर नियमित दवाई लेकर स्वस्थ्य जीवन व्यतीत कर सकता है। कुछ सावधानियाँ बरतने से इस बीमारी से बचा जा सकता है, साथ ही इसके फैलने को कम किया जा सकता है।

एच.आई.वी./एड्स संक्रमण कैसे होता है –

- किसी एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित (बिना कंडोम के) यौन संपर्क करने से।
- एच.आई.वी. संक्रमित रक्त या रक्त उत्पाद चढ़ाने से।
- ऐसी एच.आई.वी. संक्रमित सुईयाँ (इंजेक्शन और सिरिंज) इस्तेमाल करने से जिन्हें विसंक्रमित (स्टर्लाइज़) न किया गया हो।
- एच.आई.वी. संक्रमित गर्भवती स्त्री से उसके बच्चे को गर्भावस्था में या प्रसव के दौरान व स्तनपान से।

एच.आई.वी. की जाँच किसे करवानी चाहिए ?

- यदि एक से अधिक व्यक्तियों के साथ असुरक्षित (बिना कंडोम के) यौन संपर्क हो।
- यदि यौन रोग (गुप्त रोग) से पीड़ित हों।
- यदि नशीली दवाओं का सेवन सुई और सीरिंज (इंजेक्शन) द्वारा करते हों।
- यदि एच.आई.वी. की जाँच किए बिना रक्त चढ़ाया गया हो।
- यदि समलैंगिक संबंध हों।
- यदि तपैदिक़ (टी.बी.) रोग हो और इलाज करने में फ़ायदा न हो रहा हो।
- यदि महिला गर्भवती हो।

एच.आई.वी. की जाँच कहाँ करवाएं ?

एच.आई.वी. की जाँच कराने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान एकीकृत परामर्श एवं जाँच केन्द्र या आई.सी.टी.सी. है। मध्यप्रदेश में निम्न स्थानों पर आई.सी.टी.सी. केन्द्र संचालित हैं :

- सभी शासकीय चिकित्सा महाविद्यालयों में
- सभी ज़िला अस्पतालों में
- कुछ सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में
- कुछ सिविल अस्पतालों में
- कुछ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में

इन केन्द्रों में जाँच से पहले व्यक्ति को परामर्श देते हुए समस्याओं को ध्यान से सुना जाता है। समस्याओं, उनके समाधान एवं एच.आई.वी. जाँच से उपजी सम्भावनाओं पर प्रशिक्षित परामर्शदाताओं द्वारा गहन चर्चा की जाती है। व्यक्ति की संतुष्टि और अनुमति के बाद ही रक्त की जाँच की जाती है। जांच पश्चात् परामर्श के बाद ही व्यक्ति को जाँच रिपोर्ट दी जाती है। परामर्श व जाँच नि:शुल्क होती है तथा व्यक्ति की संपूर्ण जानकारी गोपनीय रखी जाती है।

एच.आई.वी. की जाँच के दौरान निम्नलिखित बातों का ध्यान रख जाता है :

- सभी प्रश्नों के उत्तर अनुभवी परामर्शदाता (काउन्सलर) द्वारा दिए जाते हैं। परामर्शदाता निर्णय लेने में व्यक्ति की सहायता करते हैं।
- जाँच करवाने वाले का नाम तथा उसकी रक्त जाँच की रिपोर्ट गोपनीय रखी जाती है।
- यदि व्यक्ति चाहता है कि उसके एच.आई.वी. संक्रमित होने का खुलासा उसके परिजनों व मित्रों पर किया जाए, जो यह पूरी सावधानी बरतते हुए किया जाता है।
- जाँच करवाने वाले व्यक्ति की भावनाओं का पूरा ध्यान रखा जाता है।
- जाँच एवं परामर्श सेवा नि:शुल्क उपलब्ध है।

एच.आई.वी. की जाँच के विषय में .....

- एच.आई.वी. के लिए रक्त की जाँच करवाने से पहले यदि व्यक्ति चाहे तो परामर्शदाता (काउन्सलर) यह फैसला करने में उसकी सहायता करेंगे कि यह जाँच करवाना जरूरी है या नहीं।
- यह जाँच व्यक्ति की सहमति के उपरांत ही की जाती है। जब कोई व्यक्ति फ़ैसला कर लेता है कि जाँच करवानी है, तो उसकी बाँह में से थोड़ी मात्रा में रक्त निकालकर जाँच की जाती है। जाँच रिपोर्ट 1 घंटे में व्यक्ति को स्वयं दी जाती है। यह रिपोर्ट पत्र-व्यवहार या टेलीफोन द्वारा नहीं दी जाती है बल्कि जाँच करवाने वाले व्यक्ति के हाथ में और जाँच पश्चात परामर्श के उपरान्त ही दी जाती है।

निगेटिव रिपोर्ट क्या है ?

- जाँच में एच.आई.वी. निगेटिव होने का अर्थ यह नहीं होता कि व्यक्ति के शरीर में एच.आई.वी. का वायरस नहीं है। सामान्य तौर पर प्रचलित एच.आई.वी. की जाँच से एच.आई.वी. वायरस नहीं बल्कि उसके प्रति